आचार्य हस्तिमल्ल

जीवन-परिचय : जिस प्रकार श्वेताम्बर सम्प्रदाय में रामचन्द्र नाटककार के रूप में प्रसिद्ध हैं, उसी प्रकार दिगम्बर सम्प्रदाय में आचार्य हस्तिमल्ल प्रसिद्ध हैं। हस्तिमल्ल सेनसंघ के आचार्य हैं और ये वीरसेन-जिनसेन की परम्परा में हुए हैं। ये अत्यन्त प्रतिभाशाली और बहुशास्त्रज्ञ विद्वान हैं। हस्तिमल्ल ब्राह्मण थे और इनके पिता का नाम गोविन्दभट्ट था। ये दक्षिण भारत के निवासी थे। इन्होंने स्वामी समन्तभद्र के प्रभाव से मिथ्यात्व का त्याग कर जैनधर्म ग्रहण किया था। गोविन्दभट्ट के छह बेटे थे, छहों कवीश्वर और विद्वान थे। आचार्य हस्तिमल्ल बहुभाषाविद्, कामशास्त्र, सिद्धान्त तर्क एवं विविध शास्त्रों के ज्ञाता थे।

आचार्य हस्तिमल का समय विक्रम संवत् 1217-1237 तक माना जाता है।

रचना-परिचय : उभय भाषा कवि चक्रवर्ती आचार्य हस्तिमल के निम्नलिखित चार नाटक और एक पुराण ग्रन्थ प्राप्त है—

1. विक्रान्त कौरव : इस नाटक में छह अंक हैं। इसमें महाराज सोमप्रभ के पुत्र कौरवेश्वर का काशी नरेश अकम्पन की पुत्री सुलोचना के साथ स्वयंवरविधि से विवाह सम्पन्न होने की कथावस्तु वर्णित है।

2. मैथिलीकल्याणम् : यह पाँच अंकों का नाटक है। इसमें बताया गया है कि वसंतोत्सव के अवसर पर सीता उपवन में झूला झूलते समय राम के अपूर्व सौन्दर्य का दर्शन कर अभिभूत हो जाती हैं और राम भी सीता के दर्शन से प्रेम में आकृष्ट हो जाते हैं। वन में पुन: सीता और राम का साक्षात्कार होता है। इस प्रकार कवि ने स्वयंवर के पूर्व राम और सीता के मिलनाकर्षण का सुन्दर चित्रण किया है।

3. अञ्जना-पवनंजय : इस नाटक में चार अंक हैं। विद्याधर राजा प्रह्लाद

के पुत्र पवनंजय एवं विद्याधर कुमारी अञ्जना के विवाह का वर्णन है। साथ ही पवनंजय द्वारा अञ्जना के त्याग का वर्णन है। बहुत वर्षों बाद इन दोनों का पुनः मिलन होता है। इस प्रकार यह नाटक अंजना पवनंजय की प्रसिद्ध कहानी पर आधारित है।

4. सुभद्रा नाटिका : इस नाटिका में चार अंक हैं। महारानी वेलाती, महाराज भरत और सुभदा के प्रेम में विघ्न डालती है। सुभद्रा और भरत का प्रेमाकर्षण दिन-रात बढ़ता जाता है। अन्त में नमि अपनी बहिन सुभद्रा का विवाह भरत महाराज के साथ यह कहकर सम्पन्न करते हैं कि ज्योतिषियों के अनुसार सुभद्रा का विवाह जिसके साथ होगा, वह चक्रवर्ती बनेगा।

5. आदिपुराण : जैन सिद्धान्त भवन आरा ग्रन्थालय में इस ग्रन्थ की पांडुलिपि विद्यमान है। इसकी कथावस्तु जिनसेन के आदिपुराण के समान ही है।